अध्याय–पंचम
शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय पंचम

5.0 भूमिका

शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है, शिक्षा के उद्देश्य देशकाल और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होते रहते है, जो समाज की परिवर्तित आवश्यकताओं के पूरक होते है। विद्यार्थियों के शिक्षा प्रदान करने के लिए योग्य शिक्षकों का होना आवश्यक है। क्योंकि संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की श्रंखला में अध्यापक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि परिस्थितियों के अनुरूप उचित निर्णय लेकर सही मार्ग को चयन करने और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न अवसरों पर सही विकल्प का चुनाव कर सके। वस्तुतः उच्चतम विकल्प के चुनाव की प्रक्रिया ही मुल्य प्रक्रिया है इस मूल्य प्रक्रिया चयनकर्ता बुद्धि, योग्यता, रूचि, शैक्षिक स्तर एवं अभिवृत्ति की अहम भूमिका रहती है, जिसके आधार पर वह अपने जीवन को विकासोन्मुख एवं समाजोपयोगी बनाने में सक्षम होता है। बालक एवं बालिकाओं में विकसित करने के लिए शिक्षकों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

5.1 संक्षेपिका

संपूर्ण लघु शोध प्रबंध को पांच अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में शोध परिचय, द्वितीय अध्याय में शोध संबंधित अध्ययन, तृतीय अध्याय में समस्या, प्रविधि एवं प्रक्रिया, चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या तथा पंचम अध्याय में शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव तथा अंत में संदर्भग्रन्थ एवं परिशिष्ट में उपयोग किये गये उपकरणों को लिया गया है। अध्यायवार संक्षिप्त जानकारी निम्नानुसार है –

5.2 प्रथम अध्याय में प्रस्तावना, भारत में शैक्षिक आयोग, शिक्षक और अध्यापन व्यवसाय, शिक्षक अभिवृत्ति, समस्या कथन, शोध कार्य में प्रयुक्त शब्दावली व अर्थ, शोध के चर, प्रस्तुत शोध अध्ययन का आवश्यकता, समस्या का सीमांकन, शोध के उद्देश्य, शोधकार्य की परिकल्पनाएं इसकी महिती दी गई है।

5.3 द्वितीय अध्याय में शिक्षकों को शिक्षण अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति इससे संबंधित पूर्व अध्ययनों की जानकारी दी गई है।

5.4 तृतीय अध्याय में शोध का शीर्षक शोध के अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली एवं अर्थ, शोध उपकरण, प्रदत्तों का सारणीयन, प्रदत्तों के संकलन में उत्पन्न कठिनाईयां, प्रयुक्त सांख्यिकी आदि की जानकारी दी गई है।

शोध का शीर्षक

"प्रारंभिक विद्यालयों को अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए है।

1. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में स्थान (क्षेत्र) के आधार पर अध्यापन अभिवृति का अध्ययन करना।
3. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में शाला के प्रकार के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षणिक योग्यता के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
6. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में व्यावसायिक योग्यता के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
7. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में उम्र के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

शून्य परिकल्पना

शोध में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएं निर्धारित की गई थी–

1. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
2. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में स्थान के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
3. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में शाला प्रकार के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
4. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में अनुभव के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
5. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षणिक योग्यता के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
6. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में व्यावसायिक योग्यता के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
7. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में उम्र के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

चर

विश्लेषण की सुविधानुसार चरों को निम्न भागों में वर्गीकृत किया गया है।

स्वतंत्र चर

लिंग, (शिक्षक, शिक्षिका), क्षेत्र–शहरी, ग्रामीण, विद्यालय–शासकीय, अशासकीय, शैक्षिक योग्यता, व्यावसायिक योग्यता, अनुभव

आश्रीत चर

अध्यापन अभिवृत्ति

शोध समस्या की सीमाऐं

शोध समस्या को निम्न सीमाओं तक केन्द्रित रखा गया –

1. भौगोलिक दृष्टि से इसे नागपुर जिला के तीन तहसील (काटोल, नरखेड, कलमेश्वर) तक सीमित रखा गया।
2. अध्ययन प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों पर किया गया।

3. अध्ययन शासकीय, अशासकीय विद्यालय, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में जो शिक्षक अध्यापन कर रहे उन पर किया गया।

4. अध्ययन 129 शिक्षकों पर किया गया।

न्यायदर्श चयन प्रक्रिया –

अनुसंधानकर्ता ने न्यायदर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया है जिनमें 129 प्रदत्तों में से 77 पूरूष शिक्षक एवं 52 महिला शिक्षक थी।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन अभिवृत्ति जानने के लिए डॉ. एस.पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित प्रमाणिकृत, अध्यापक अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया।

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु 'माध्य' 'मानक विचलन' 'टी' अनुपात एवं प्रसरण विलेषण का उपयोग किया गया।

5.5 चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है। शोध उद्देश्य के आधार पर शून्य परिकल्पनाओं की सार्थकता का अध्ययन किया गया है। प्रदत्तों के विलेषण की तालिका क्रमांक 5.1 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक 5.1 प्रदत्तों का विश्लेषण

परिकल्पना क्र.	तालिका क्र.	प्रयुक्त सांख्यिकी	प्राप्त परिणाम	प्राप्त निष्कर्ष
1	4.1	टी अनुपात	1.2	NS
2	4.2	टी अनुपात	0.659	NS
3	4.3	टी अनुपात	1.663	NS
4	4.4	प्रसरण विश्लेषण	1.023	NS
5	4.5	प्रसरण विश्लेषण	2.509	NS
6	4.6	प्रसरण विश्लेषण	0.297	NS
7	4.7	प्रसरण विश्लेषण	1.504	NS

निष्कर्ष एवं व्याख्या

1. प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया । अध्यापन अभिवृत्ति के घटकों पर भी लिंग का कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया। इसका अर्थ यह होता है कि लिंग का शैक्षिक व्यवसाय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का भी शिक्षकों के अध्यापन अभिवृत्ति में कोई प्रभाव नहीं पाया गया है। लेकिन क्षेत्र का अध्यान अभिवृत्ति के घटक छात्र पर प्रभाव पड़ता है कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक में शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की अपेक्षा से लगभग उच्च अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति पायी जाती है।
3. विद्यालयों के प्रकार का भी शिक्षकों के अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। लेकिन प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों को देखने से पता लगता है कि अध्यापन अभिवृत्ति का घटक शिक्षण प्रभाव दिखाई देता है।
4. शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के अनुभव के आधार पर अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है तथा अध्यापन अभिवृत्ति के घटकों पर भी अनुभव का कोई अंतर प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के शैक्षिक योग्यता का शैक्षिक व्यवसाय से संबंधित अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया लेकिन मध्यमान देखने से पता लगता है कि शिक्षकों के शैक्षिक योग्यता का बाल केन्द्रित अध्यापन यह घटकों पर दिखाई देता है।
6. शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के व्यावसायिक योग्यता का शैक्षिक व्यवसाय से संबंधित अध्यापन अभिवृतित में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। योग्यता का अध्यापन अभिवृत्ति के घटकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
7. शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के उम्र का उनके शिक्षा व्यवसाय से संबंधित अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है । लेकिन

मध्यमान देखने से पता लगता है कि शिक्षकों के उम्र का अध्यापन अभिवृत्ति के घटक छात्र इन पर प्रभाव दिखाई देता है।

सुझाव

1. शिक्षकों को अपने व्यवसाय में आस्था, निष्ठा एवं लगन होनी चाहिए तभी वह विद्यार्थियों एवं समाज के प्रति अपने विविध दायित्वों को पूर्ण कर सकेगा।
2. शिक्षकों में अपनी व्यावसायिक उन्नति हेतु सदैव जागरूक रहना चाहिए अपने विशिष्ट क्षेत्र में हुई अध्ययन शोधों तथा विविध प्रवृत्तियों से उसे अवगत होना चाहिए।
3. शिक्षकों के लिये संस्थान में अध्यापन अभिवृत्ति पर आधारित परिचर्चाओं का आयोजन किया जाना चाहिए जिससे शिक्षकों की अध्यापन संबंधि अभिवृतित में सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न हो सके।
4. छात्र एवं छात्राओं में शील, शक्ति एवं सौन्दर्य गुणों को विकसित करना शिक्षक पर निर्भर है। सत्यम् शिवं सुदरम् गुणों को उन्हे स्वयं में संग्रहित करना चाहिए।
5. स्कूल में शिक्षण संबंधित विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये जैसे-वाद विवाद प्रतियोगिता वकृत्व स्पर्धा, स्नेहसम्मेलन, निबंध लेखन स्पर्धा आदि।
6. शिक्षकों के लिये प्रशिक्षण शिबिर रखी जाती वह उसमें शिक्षकों सहभागी होना चाहिए।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. प्राथमिक स्तर पर शहरी शिक्षकों व शिक्षिकाओं में अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के अध्यापकों की अध्यापन संबंधी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. प्राथमिक स्तर पर शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है।

4. डी.एड तथा बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का शिक्षण व्यवसाय से संबंधित अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
5. सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों तथा सेवारत शिक्षक का शिक्षण व्यवसाय से संबंधित अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।